मन्नू भंडारी की भाशिक सर्जनात्मकता

डॉ0 डेजी कुमारी

भाषा सृजन की अनिवार्य शर्त है। किसी भी रचना का उसके पाठक वर्ग से सही तालमेल सर्वप्रथम भाषिक स्तर पर ही बैठता है। अतः भाषा जितनी सहज और संप्रेषणीय होगी, पाठक वर्ग कथ्य को और उस कथ्य के माध्यम से अभिव्यक्त लेखक के मनोभावों और विचारों को उतना ही नजदीक से महसूस कर पाएगा। भाषा सिर्फ कुछ भारी–भरकम शब्दों का नाम नहीं है। भाषा एक सम्वेदना है। विभिन्न मनः स्थितियों और परिस्थितियों को समझने और विश्लेषित करने की सुखद चेष्टा। यह सम्वेदना जितनी सामाजिक होगी भाषा उतनी ही लचीली होगी, व्यापक होगी। परिवेश, चरित्र और चरित्रों की मनः स्थितियों में आए बदलावों की सूक्ष्म पकड़ से उपजी लेखकीय प्रत्युत्पन्नमति ही लचीली भाषा का निर्माण करती है। इन बदलावों के साथ भाषा में आया बदलाव अपेक्षित भी है और कथ्य के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद भी। भाषा का 'रूप बदलना' इसी को कहते हैं। वह जितना अधिक रूप बदलती है उतनी ही स्पष्टत्तर होती जाती है और उसका यह लचीलापन ही कथ्य की सजीवता को अन्त तक बचाए रखता है।